+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(स्वतंत्रता की अनकही कहानियां)

(August 2024)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की अनकही कहानियां
- सेलुलर जेल: प्रतिरोध की गाथा
- रानी अब्बक्का: देश की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी

भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की अनकही कहानियां:

- भारत के इतिहास में, कर्तव्य काल की अवधारणा, कर्तव्य और प्रतिबद्धता की एक मार्मिक याद के रूप में प्रकट होती है, जिसने कम चर्चित स्वतंत्रता सेनानियों के कार्यों को परिभाषित किया। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उनकी नि:स्वार्थ गतिविधियां और बलिदान राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के लिए एक कालातीत आह्वान के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

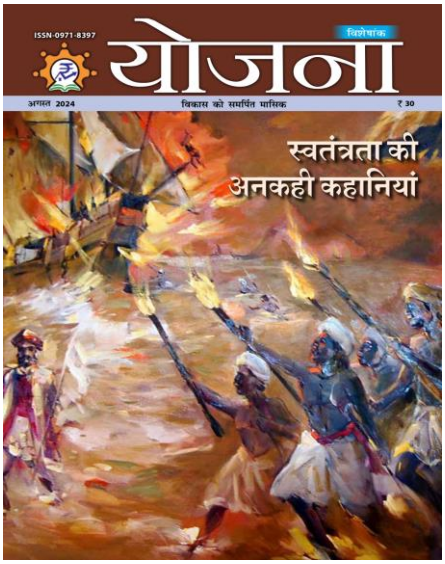

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों के इन नायकों ने स्वतंत्रता के साझा सपने के लिए बलिदान और समर्पण की भावना को मूर्त रूप दिया है। उनके नाम हालांकि स्मारकों पर सुशोभित नहीं हो पाए, लेकिन उनका साहस और संकल्प इतिहास में गूँजता रहता है।
- गुलामी के दौर में राजनीतिक कैदियों ने जिन कठिनाइयों को झेला, कठोर दंड का सामना किया और न्याय पाने के लिए भूख हड़ताल तक की, वह उनके स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों को समर्पित अटूट भावना को उजागर करता है।

- भारत वर्तमान में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं पर गर्व के अथाह पुनरुत्थान का गवाह बन रहा है। राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में, पीढ़ियों से प्रेरणा के स्थायी स्रोत के रूप में काम करने वाली कविता और संगीत के परिवर्तनकारी प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में साहित्य, सामाजिक बदलाव पर कलात्मक अभिव्यक्ति के गहन प्रभाव का प्रमाण है।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान समाचार-पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। महात्मा गांधी और सरदार पटेल जैसे दूरदर्शी नेता हमें अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज की खोज के लिए प्रेरणा देते हैं और हमारा मार्गदर्शन करते रहते हैं।
- अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक सुंदरता से ओतप्रोत पूर्वोत्तर भारत को, अक्सर देश की स्वतंत्रता की लड़ाई की मुख्यधारा की कहानियों में अनदेखा किया जाता रहा है। इस क्षेत्र की अनकही कहानियों को तलाशने के हालिया प्रयासों से साहस, बलिदान और परिवर्तनशीलता की एक ऐसी कहानी सामने आई है जो देश के अन्य हिस्सों की वीरता की कहानियों से अगर आगे नहीं निकलती तो मेल

जरूर खाती है। पूर्वोत्तर भारत में स्वतंत्रता संग्राम केवल औपनिवेशिक उत्पीड़न की प्रतिक्रिया नहीं थी, यह स्थानीय इतिहास और परंपराओं से जुड़ा एक सूक्ष्म प्रतिरोध था।

- भारत की आजादी में गुजरात के योगदान में अहम भूमिका निभाने वाले कम चर्चित नायकों की कहानियां भी हैं। इसमें गुजरात की ऐतिहासिक ताने-बाने में वीरता और आत्म-बलिदान की कहानियां भी शामिल हैं, जो यहां के लोगों की अटूट भावना और राष्ट्र के लिए उनके दृढ़ समर्पण का प्रमाण हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सेल्यूलर जेल: प्रतिरोध की गाथा

परिचय:

- सेल्यूलर जेल, भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद को समर्पित एक महत्वपूर्ण स्मारक रही है। देश के मुख्य भूमि से 100 किलोमीटर दूर अंडमान एवं निकोबार के पोर्ट ब्लेयर में स्थित यह जेल क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों को कैद में रखने की पसंदीदा जगह थी।

- सेल्यूलर जेल के जेल परिसर का निर्माण 1896 से 1906 के बीच कैदियों को मजदूरों के रूप में तैनात करके किया गया था।
- 1905 से 1919 के दौरान इस जेल का जेलर रहा डेविड बैरी ने क्रांतिकारी कैदियों पर आतंक ढाया था। ये कैदी क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे, जो भारत के कोने-कोने से यहां लाए गए थे।

1909: राजनीतिक कैदियों का पहला जत्था

- अलीपुर बम कांड के दोषी ठहराए गए क्रांतिकारी कोलकाता से पहुंचने वाले पहले जब थे वीर शामिल थे जिन्हें दिसंबर 1909 को सेल्यूलर जेल पहुंचाया गया था।

- इस जेल में बंद वारीन घोष ने इस जेल के जेलर डेविड बेरी को जल्लाद माना था। वही इस जेल में बंद प्रसिद्ध कैदी वी. डी. सावरकर ने भी बेरी को एक निरंकुश और अत्याचारी जेलर माना था।
- जेलर डेविड बेरी के समय सेल्यूलर जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजनीतिक कैदियों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता था। उन्हें राजद्रोही कहा जाता था और उनके साथ समान अपराधियों से भी बदतर व्यवहार किया जाता था। सेलुलर जेल में कैदियों से कई तरह के काम कराए जाते थे, जिसमें सबसे कठिन काम के रूप में उन्हें बैल की जगह हाथ से कोल्हू चलाकर तेल निकालना पड़ता था और कैदी जब तक अपना कोटा पूरा नहीं कर लेते थे, उन्हें तब तक बिना भोजन के काम करना होता था, वह भी कभी-कभी पूरी रात भर।

1911: प्रतिरोध की शुरुआत और सेल्यूलर जेल में पहली हड़ताल

- 1911 में एक पंजाबी कैदी नंद गोपाल ने सेल्यूलर जेल में प्रतिरोध की आवाज उठाई थी। इन्हे 'स्वराज' अखबार में लेख लिखने के कारण 10 वर्ष की सजा सुनाई गई थी।
- नंद गोपाल ने कोल्हू से तेल निकालने को लेकर निष्क्रिय प्रतिरोध शुरू किया था। डेविड बेरी के उत्पीड़न ने और नंद गोपाल की निडरता से और कैदियों में भी

विरोध की भावना फैलती गई और उन सभी ने कोल्हू में काम करने से इनकार कर दिया।

- जेल प्रशासन ने पहले तो दंडित किया, लेकिन अंततः थक-हार कर कैदियों को आश्वासन दिया कि उन्हें तेल मिलों में काम नहीं करना पड़ेगा। यह सेल्यूलर जेल के राजनीतिक कैदियों की पहली बड़ी जीत थी।

1912: आभासी नरक (आत्महत्या एवं मानसिक संतुलन खोना)

- उल्लेखनीय है कि सेल्यूलर जेल राजनीतिक कैदियों के लिए नरक की तरह बन गई थी। इस नरक में अपमान, निरादर और कष्टदायक श्रम से थक कर, 28 अप्रैल 1912 की रात को एक कैदी इंदुभूषण रॉय ने अपनी ही कमीज को फाड़कर रस्सी बनाकर फांसी लगा ली।
- उल्लासकर दत्ता जो एक खुशमिजाज व्यक्ति थे, वह भी असहनीय यातना का शिकार हुए, जिससे वे पागलपन का शिकार हुए।

1912: दूसरी आम हड़ताल

- इंदुभूषण की आत्महत्या और उल्लासकर के पागलपन ने सेल्युलर जेल में दूसरे आम हड़ताल को जन्म दिया। राजनीतिक कैदियों ने डेविड बेरी के आगमन पर सम्मान के प्रतीक रूप में खड़े होने से इनकार कर दिया; जेल अधिकारियों द्वारा इस्तेमाल की गई अपमानजनक भाषा का जवाब और भी अधिक बलपूर्वक दिया।

चिंसुरा के नानी गोपाल 72 दिनों तक भूख हड़ताल पर रहे, हालांकि वे डेढ़ महीने से अधिक समय तक उपवास करने के बाद थक गए और असहाय थे, फिर भी अधिकारियों ने उन्हें हथकड़ी से लटकाने में संकोच नहीं किया।

- अंततः 6 दिसंबर 1912 को हड़ताल समाप्त हो गई इसके बाद राजनीतिक कैदियों को कुछ राहत और रियायतें दी गई।
- इस तरह की सूचनाओं से परेशान होकर तत्कालीन भारत सरकार ने सेल्युलर जेल के बारे में अप्रैल 1914 में एक अधिसूचना जारी की जिसके अनुसरण में पुलिन बिहारी दास को छोड़कर सभी सजा काट रहे कैदियों को वहां से अन्य भारतीय जेल में वापस भेज दिया गया।

1915-1917: क्रूर जेलर बेरी ने इसे वापस ले लिया

- भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए गदर आंदोलन 1915 में असफल हो गया। लाहौर षड्यंत्र मामलों और अन्य में दोषी ठहराए जाने और सजा सुनाए जाने के बाद, कई राजनीतिक कैदियों को अंडमान ले जाया गया।
- गदर करने वालों का स्वागत जेलर बेरी ने किया। बेरी ने पहले ही तय कर लिया था कि स्वराज की मांग करने वाले इन उग्रवादियों को तेल मिल में कठोर यातनाएं दी जायेंगी।

- राजनीतिक कैदियों को अक्सर दंडित किया जाता था। कोड़े मारना, 6 महीने तक कोठारियों में कैद करना, बेड़िया लगाना और काम आहार के साथ खड़े रखकर हथकड़ी लगाने का अक्सर सहारा लिया जाता था। छोटे पिंजरों में कैद करना और भी बुरा था।
- मास्टर छतर सिंह, अमर सिंह, ज्वाला सिंह और लाल सिंह को सालों तक ऐसे पिंजरों में कैद रखा गया था। छतर सिंह को कई वर्षों तक पिंजरे में कैद रहना पड़ा था जिसके लिए अंततः सोहन सिंह भाकना ने भूख हड़ताल का सहारा लिया और छतर सिंह को पिंजरे की कैद से मुक्त कराया।
- उल्लेखनीय है कि राजनीतिक कैदियों ने अपने पूर्ववर्तियों की तरह खुली अवज्ञा के माध्यम से निराशाजनक स्थिति का विरोध करने का फैसला किया। वे जेलर बेरी और उसके अधीनस्थों से घृणा करते थे। वे ना तो उसके सामने खड़े होते थे और ना ही उनके साथ सम्मान से बात करते थे, जिससे बेरी क्रोध से जलता था।
- हड़ताल की अवधि में जेल अधिकारियों को थका दिया था; सरकार की लगातार पूछताछ से उन्हें शर्मिंदा होना पड़ता था; वे जेल में सम्मान की कमी भी महसूस कर रहे थे। अंत में वह राजनीतिक कैदियों को उनकी पसंद का हल्का काम देने के लिए सहमत हुए बशर्ते कि वे हड़ताल खत्म करें और काम शुरू करें। उसने

राजनीतिक कैदियों की अन्य मांगों पर विचार करने पर सहमत जताई और अंततः हड़ताल खत्म हुई।

1917 के बाद: 'नरक के देवता' डेविड बेरी का अंत

- इस घटना के बाद डेविड बेरी का अहंकार चूर-चूर हो गया था; कभी पोर्ट ब्लेयर का स्वयंभू देवता अब एक पत्थर का टुकड़ा बन गया था।
- राजनीतिक कैदियों के साथ किसी भी तरह की परेशानी या टकराव से बचने के लिए अधिकारियों द्वारा प्रयास किए गए; उन्हें हल्का काम सौंपा गया; तेल मिले अब बंद पड़ गई थी; किताबें, अखबार पढ़ना और यहां तक की कैदियों को आपस में मिलना-जुलना और बातचीत करने पर भी आपत्ति नहीं थी।
- डेविड बेरी बीमार पड़ गया और उसने छुट्टी ले ली। वह चार लोगों के सहारे जहाज पर चढ़ा और बाद में भारत की मुख्य भूमि पर उसकी मृत्यु हो गई। अंडमान के सेल्यूलर जेल का बर्बर खलनायक का लंबा इतिहास यहीं समाप्त हो गया।
- अंततः भारतीयों की आम और लोकप्रिय मांग या उनके निरंतर आंदोलन या अपनी राजनीतिक बुद्धि के कारण झुकते हुए ब्रिटिश सरकार ने 1920 में अंडमान में राजनीतिक कैदियों के लिए सामान्य माफी की घोषणा की। इसके बाद सेल्यूलर जेल को बंद कर दिया गया और 1921 तक सभी शेष राजनीतिक कैदियों को मुख्य भूमि पर वापस ले जाया गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

रानी अब्बक्का: देश की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी

कौन थीं रानी अब्बक्का?

- महिला स्वतंत्रता सेनानियों में अक्सर रानी लक्ष्मीबाई का जिक्र किया जाता है, लेकिन आज से पांच सौ साल पहले वीरांगना रानी अब्बक्का ने फिरंगियों को नाकों चने चबवा दिए थे।

- वे देश में औपनिवेशिक आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ने वाली पहली भारतीय महिला थीं।
- कर्नाटक के उल्लाल नगर के प्रसिद्ध चौटा घराने में जन्मी रानी अब्बक्का का पूरा नाम अभया रानी अब्बक्का चौटा था। उन्होंने उल्लाल नगर में साल 1525-1570 तक शासन किया था।
- उस समय उल्लाल में पितृवंशीय परंपरा की जगह मातृवंशीय परंपरा थी। इसी के चलते रानी अब्बक्का ने सिंहासन संभाला था। उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और धनुर्विद्या में महारत हासिल की हुई थी। इसके अलावा उन्हें प्रशासन को कैसे चलाना है और कैसे एक मजबूत रणनीति के तहत अपने सम्राज्य को चलाना है इसका भी बखूबी ज्ञान था।

- ऐसा माना जाता है कि रानी अब्बक्का ऐसी आखिरी शख्स थी, जिन्होंने युद्ध के दौरान अग्निबाण का उपयोग किया था। उनकी बहादुरी और रणकौशल के कारण ही उन्हें 'अभया रानी' भी कहा जाने लगा था।

रानी के शासन काल में व्यापार से फल-फूल रहा था उल्लाल:

- रानी अब्बक्का ने मंगलुरु की बंगा रियासत के राजा लक्षमप्पा अरसा संग शादी की थी। पति से रिश्ते खराब होने के बाद अलग हो गईं और वापस उल्लाल आ गईं। रानी अब्बक्का के शासन के समय उल्लाल से मध्यपूर्व के देशों को मसाले, चावल और कपड़े का निर्यात किया जाता था। उनके शासन काल में पुर्तगाल के व्यापारी हिंद महासागर के समुद्री रास्तों पर कब्जा कर चुके थे।
- रानी अब्बक्का ने अपने राज्य में हिंदू, मुस्लिम, जैन सभी धर्मों के लोगों को बराबर सम्मान दिया था और उन्हें एक न्यायप्रिय शासक के रूप में देखा जाता था।

1525 में उल्लाल में दाखिल हुए पुर्तगाली:

- सन् 1525 में पुर्तगाली उल्लाल पहुंचे और वह उल्लाल के व्यापार को कब्जाने की फिराक में थे और उनके पति ने भी उनका समर्थन किया था। लेकिन फिरंगी कहां उनके आगे टिक पाते। साल 1525 के आस-पास पुर्तगालियों ने दक्षिण कन्नड़ के

तट पर हमला किया और मैंगलुरु के बंदरगाह को तबाह कर दिया था। फिरंगी पुर्तगालियों के इरादे भांपते हुए अब्बक्का ने पुर्तगालियों को उल्लाल से बाहर खदेड़ दिया। इसके बाद भी वे अपनी हरकतों से बाज नहीं आए थे। लेकिन रानी ने अंत तक हार नहीं मानी थी।

- पुर्तगालियों ने कई बार उल्लाल पर हमला बोला और हर बार अब्बक्का ढाल बनकर अपने राज्य की रक्षा के लिए खड़ी रहीं। रानी अब्बक्का ने पुर्तगाली व्यापारियों की सेना को एक-दो साल नहीं बल्कि कई दशकों तक उल्लाल में घुसने नहीं दिया। अब्बक्का के समृद्ध राज्य पर पुर्तगालियों ने जब-जब हमला किया, अब्बक्का ने अपने शौर्य और रणकौशल से उसे नाकाम कर दिया और अंत में पुर्तगालियों को कर्नाटक की भूमि से भागना ही पड़ा।

रानी अब्बक्का से जुड़ी दंतकथा:

- पारंपरिक विवरणों के अनुसार, वह एक बेहद लोकप्रिय रानी थीं और यह इस तथ्य से भी प्रमाणित होता है कि वह आज भी लोककथाओं का हिस्सा हैं। रानी की कहानी पीढ़ी दर पीढ़ी लोकगीतों और यक्षगान के माध्यम से सुनाई जाती रही है, जो तुलुनाडु में एक लोकप्रिय लोकनाट्य है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- अब्बक्का को एक श्यामवर्णी और सुंदर महिला के रूप में चित्रित किया गया है, जो हमेशा एक आम महिला की तरह साधारण कपड़े पहनती हैं। उन्हें एक देखभाल करने वाली रानी के रूप में चित्रित किया गया है जो न्याय करने के लिए देर रात तक काम करती थी। किंवदंतियों का यह भी दावा है कि अब्बक्का पुर्तगालियों के खिलाफ अपनी लड़ाई में अग्निबाण का इस्तेमाल करने वाली अंतिम ज्ञात व्यक्ति थीं।
- कुछ विवरण यह भी दावा करते हैं कि उनकी दो समान रूप से बहादुर बेटियाँ थीं जिन्होंने पुर्तगालियों के खिलाफ उनके युद्धों में उनके साथ लड़ाई लड़ी थी। हालाँकि परंपरा तीनों को - माँ और दो बेटियों को एक ही व्यक्ति मानती है।